हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, सोमवार 13 अप्रैल 2026

13 जुटाया गया एक तिनका भी हमारे साथ नहीं जाएगा...

14 सीनियर एशिया चैम्पियनशिप में सुजीत कलकल ...

SARASWATI VIDYA VIHAR
Asalwas Dubia
ADMISSION OPEN 2026
NCC TRAINING PROGRAMME
Leaders Of Tomorrow, Cadets Today
911 411 6000 | 911 411 8000

खबर संक्षेप

श्याम बाबा का पांचवां संकीर्तन 22 को

भिवानी। श्री खाटू श्याम मंडल बहल द्वारा 22 अप्रैल को श्री कृष्ण वाटिका बहल में श्री श्याम बाबा का पांचवां श्याम संकीर्तन आयोजित किया जाएगा। उक्त जानकारी देते हुए मंडल सदस्य गुंजन पातवानिया, रिंकू मित्तल, मनोज सिधनवा ने बताया कि कीर्तन में कलाकार रूपाली मेहता, सोनू सिंगला, कृष्ण गाबा, मनोज हजारीलाल शर्मा सहित अन्य कलाकार बाबा की महिमा का गुणगान करेंगे। कार्यक्रम में पूर्व सरपंच गजानंद अग्रवाल अतिथि होंगे जबकि महंत विकास गिरी महाराज का विशेष सान्निध्य रहेगा। राकेश म्यूजिकल ग्रुप का विशेष सहयोग रहेगा। मनोज महमिया गणेश वंदना कार्यक्रम पेश करेंगे। इससे पहले श्याम भक्तों द्वारा श्री श्याम मंदिर से कृष्ण वाटिका तक श्री श्याम निशान पद यात्रा का आयोजन किया जाएगा।

बाल वाटिका में श्रीश्याम गुणगान महोत्सव 26 को

भिवानी। आगामी 26 अप्रैल को श्रीश्याम गुणगान मंडल भिवानी समिति के तत्वावधान में बाल भवन बाल वाटिका में 24वां श्रीश्याम गुणगान महोत्सव का आयोजन सायं 4:15 से प्रभु इच्छा तक किया जाएगा।

सत्र शुरू होने से पहले किताबें भेजने का दावा सौ-सौ कोस दूर

तीसरी क्लास की पुस्तकों का पहुंचा स्टॉक

पुरानी किताबें, नई क्लास,12 दिन बीते, विद्यार्थियों की टूट रही आस

पहली, दूसरी, चौथी तथा पांचवीं क्लास के बच्चों को अभी तक कोई भी किताब उपलब्ध नहीं हो पाई है।

भिवानी

पुरानी किताबें, नई क्लास। सुनने में आपकों जरूर अटपटा लगेगा,लेकिन यह सौ फीसदी सत्य है। सरकारी प्राइमरी स्कूलों में सत्र शुरू होने से पहले किताबें भेजने का दावा सौ सौ कोस परे है। हालात ये है कि मार्च माह के अंतिम सप्ताह तक प्राइमरी स्कूलों में किताबें पहुंच जानी चाहिए, लेकिन नए सत्र के 12 दिन बीत गए,लेकिन अभी तक शिक्षा विभाग ने केवल तीसरी क्लास के बच्चों की ही किताबों की डिलीवरी भेजी है।

पहली, दूसरी, चौथी तथा पांचवीं क्लास के बच्चों को अभी तक कोई भी किताब उपलब्ध नहीं हो पाई है। किताब उपलब्ध न होने की वजह से शिक्षक दूसरे बच्चों से पुरानी किताबें लेकर क्लास के बच्चों को पढा रहे है। शिक्षा विभाग के लचर रवैये की वजह से बच्चों की किताबें मिलने की आस धुंधली होती नजर आ रही है। उल्लेखनीय है कि प्रत्येक प्राइमरी स्कूल में नया सत्र शुरू होने से पहले मार्च माह में किताबों की खेप पहुंचानी होती है। क्योंकि नए सत्र शुरू होते ही शिक्षक पोर्टल पर पंजीकृत बच्चों को किताबें वितरित करके उनकी पढ़ाई शुरू करवा सके। सभी प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा विभाग निशुल्क किताबें वितरित करता है। एससीईआरटी इन क्लासों का सिलेबस तय करते है और शिक्षा विभाग इन क्लासों की किताबें छपवा कर स्कूलों में भेजते है। किताबें मिलने के बाद ही अधिकांश सरकारी स्कूलों में बच्चों की पढाई शुरू हो पाती है। पहली व दूसरी क्लास के लिए हिंदी, इंगलिस व गणित तथा तीसरी से पांचवीं क्लास तक के बच्चों के लिए हिंदी, अंग्रेजी, गणित तथा ईवीएस और बाल वाटिका के बच्चों के लिए केवल एक ही किताब भेजी जाती है। अधिकांश प्राइमरी स्कूलों में किताबें नहीं भेजी गई है। यहां यह गौर करने वाली बात यह है कि शिक्षा विभाग बच्चों की संख्या के हिसाब से पहली से लेकर पांचवीं क्लास के बच्चों के लिए किताबें भेजते है। शिक्षा विभाग यह आंकड़ा मार्च माह में क्लास में पंजीकृत बच्चों की संख्या के हिसाब से अगली क्लास में किताबें भेजता है।

मसलन मार्च माह में तीसरी क्लास में 40 बच्चे है तो विभाग चौथी क्लास में 40 बच्चों की संख्या के हिसाब से ही किताबें भेजेगा। अन्य क्लासों में भी इसी तरह से किताबों का स्टॉक भेजा जाता है। शिक्षा विभाग के पास एमआईएस पोर्टल पर सभी क्लासों के बच्चों का आंकड़ा होता है। वे उसी आंकड़े के हिसाब से इन क्लासों के बच्चों के लिए किताबें जारी करते है।

भिवानी। क्लास में उपस्थित बच्चे। फाइल फोटो।

जांच करवाएंगे

इस बारे में जिला परियोजना अधिकारी शिवकुमार ने बताया कि इस तरह का मामला उनके संज्ञान में नहीं है। वे इसकी जांच करवाएंगे। अगर किताबें नहीं पहुंची है तो इस बारे में आला अधिकारियों से बात करके जल्द ही किताबें मंगवाई जाएंगी।

■ शिक्षा विभाग बच्चों की संख्या के हिसाब से पहली से लेकर पांचवीं क्लास के के लिए किताबें भेजता है

कभी-कभार पहुंचती बाल वाटिका श्रड की किताब

पहली से पांचवीं क्लास तक की किताबें देर सवेर पहुंच तो जाती है,लेकिन वाल वाटिका तृतीय में दाखिल बच्चों के लिए किताबें भेजने का कोई वक्त नहीं होता। कायदे से इस क्लास के लिए अप्रेल माह में किताबें भेजी जानी चाहिए,पर कई बार नवम्बर व दिसम्बर तो कई बार पूरा साल ही किताब ही नहीं भेजी जाती। ऐसे में शिक्षक पुरानी किताब या अपने विवेक ही बच्चों को पढ़ाकर उनका ज्ञान बढा रहे है।

गैर शिक्षण कार्यों से छुटकारा दिलाया जाए

हरियाणा राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चाहर ने बताया कि अभी तक केवल तीसरी क्लास की ही किताबें पहुंची है। फिलहाल पुरानी किताबों से ही कार्य चलाना पड़ रहा है। साथ ही उन्होंने अधिकारियों से गैर शिक्षण कार्यों से छुटकारा दिलाए जाने की मांग की। आए दिन शिक्षकों से कभी जनगणना तो कभी एसआईआर में ड्यूटी देनी पड़ रही है।जिस वजह से शैक्षणिक कार्य प्रभावित हो रहे है।

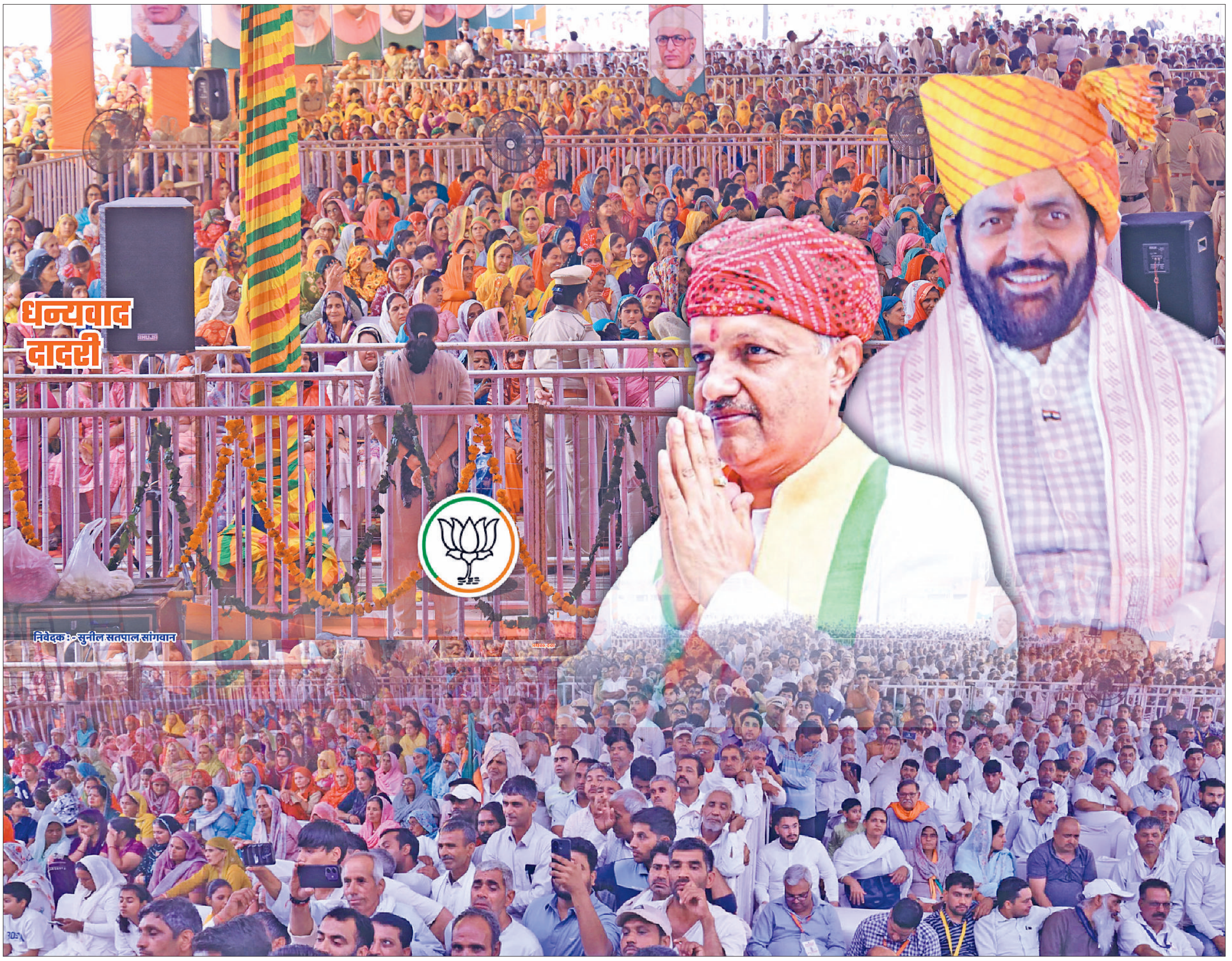

हरियाणवी गायन विधा

हरियाणा की लोक-गीत संस्कृति गीत, रागिनी व स्वांग तक ही सीमित नहीं है। इसमें 40 से भी अधिक गायन की विधाएं रही हैं। इनमें दोहा, काफिया (तीन पंक्ति), चौबोला, शिव स्तुति, सोहनी, झूलना, राधेश्याम, अली बख्श, ख्याल, निहाल दे, दौड़, साका, आल्हा, बहर-ए-तवील, नसीरा, बारहमासा, छंद, उलट बांसी आदि शैलियां शामिल हैं। हरियाणा की गायन शैलियों की यह विशेषता भी रही है कि विशेषकर महिलाओं के गीत मौसम के हिसाब से रचे जाते रहे हैं।

लोक संस्कृति के स्तंभ: मास्टर सतबीर सिंह

उनकी गायकी में न केवल शुद्धता थी, बल्कि पूर्ण जोश और होश का अद्भुत समन्वय भी देखने को मिलता था। उनकी गायन शैली अत्यंत प्रभावशाली और भावपूर्ण थी। उनके सुरों में सादगी, भावनाओं में गहराई और प्रस्तुति में सहजता दिखाई देती थी। वे रागनी, भजन और लोकगीतों को ऐसी आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करते थे कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे।

उनका जीवन इस सत्य का प्रतीक है कि सच्चे कलाकार कभी मरते नहीं, वे अपने गीतों और अपने संस्कारों के माध्यम से सदैव जीवित रहते हैं। वर्तमान समय में मास्टर सतबीर सिंह की समृद्ध, गौरवशाली संगीत-परंपरा को उनके अनेक शिष्य पूर्ण निष्ठा, समर्पण और आदरभाव के साथ आगे बढ़ा रहे हैं।

जयंती विशेष

रामबीर सिंह 'राम'

हरियाणा की लोक संस्कृति सदियों से अपनी सादगी, वीरता, भक्ति और लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध रही है। इस सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने वाले अनेक कलाकारों ने इसे जीवंत रखा है। उन्होंने अपने सुर, ताल और साज-बाज से इसे सहेजा है और जनमानस में इसका प्रचार-प्रसार किया है। लोकसंस्कृति के चितेरे ऐसे ही महान कलाकारों में मास्टर सतबीर सिंह का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने शिक्षक और गायक दोनों ही रूपों में समाज की सेवा की और हरियाणवी लोकसंस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया।

मास्टर सतबीर सिंह का जन्म 13 अप्रैल 1951 को हरियाणा के भैंसवाल गांव में एक सम्मानित एवं संस्कारी परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम पृथी सिंह एवं माता का नाम भरथो देवी था, दोनों ही बहुत धार्मिक और सांस्कृतिक प्रवृत्ति के थे। परिवार में आध्यात्मिकता, परंपरा और संस्कृति का वातावरण था, जिसका प्रभाव बालक सतबीर सिंह के व्यक्तित्व पर प्रारंभ से ही दिखाई देने लगा। यही कारण था कि बचपन से ही उनके भीतर संगीत, भजन और लोकसंस्कृति के प्रति गहरी रुचि पैदा हो गई। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक परिवेश से समृद्ध गांव भैंसवाल में समय-समय पर अनेक प्रतिष्ठित गायक, सांगी और भजनी अपनी मंडलियों के साथ अपनी कला का प्रदर्शन करने आया करते थे। इस सजीव और सुरमयी वातावरण ने भी बालक सतबीर के कोमल मन पर गहरा प्रभाव डाला। इस प्रकार धीरे-धीरे उनकी हृदयतंत्री के तार झंकृत हो उठे। उनकी मनवीणा से सप्त-सुर फूट पड़े और वे संस्कृति के अनन्य उपासक बन गए। "जहां चाह, वहां राह" वाली उक्ति के अनुसार अब संगीत साधना को ही वे अपने जीवन का सर्वस्व मानने लगे। स्नातक पास करने के उपरांत वे सरकारी सेवा में पीटीआई के पद पर नियुक्त हुए। एक शिक्षक के रूप में उन्होंने विद्यार्थियों को केवल शारीरिक शिक्षा ही नहीं दी, बल्कि उनमें अनुशासन, संस्कार और देशप्रेम की भावना भी विकसित की। मास्टर सतबीर सिंह ने लोकसंस्कृति के मर्मज्ञ रामदत्त को अपना गुरु माना और उनसे लोकगायन की बारीकियां सीखी। गुरु-शिष्य परंपरा के इस संबंध ने उनके गायन को नई दिशा और गहराई प्रदान की। उन्होंने अपनी गायकी की शुरुआत वर्ष 1971 में हिसार की नील कॉलोनी में एक मंदिर निर्माण कार्यक्रम से की। यह उनके जीवन का पहला सार्वजनिक मंच था, जहां उन्होंने लगातार 11 कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उनकी प्रस्तुति इतनी प्रभावशाली रही कि न केवल सभी कार्यक्रम अत्यंत सफल हुए, बल्कि उस मंदिर का अधूरा पड़ा निर्माण कार्य भी पूर्ण हो सका। इस घटना ने उनके भीतर आत्मविश्वास का संचार किया और यहीं से उनके सफल लोकगायन की यात्रा प्रारंभ हुई।

उनकी प्रतिभा को एक निर्णायक मोड़ तब मिला, जब कुराड़ (सोनीपत) में आयोजित एक प्रतियोगिता में कई प्रतिष्ठित गायकों के बीच प्रसिद्ध सांगी जयनारायण ने उन्हें प्रथम स्थान प्रदान किया, तब उन्हें स्वयं अपनी गायन क्षमता का वास्तविक आभास हुआ। यह सम्मान उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बना और उन्होंने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी कला को निखारना जारी रखा। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उस दौर में महाशय पालेराम हलालपुरिया, राजकिशन अगवानपुरिया, जगबीर कारोरिया, बाऊराम, सत्ते, ब्रह्मानंद, चंदन, बाली शर्मा, रमेश कलावड़िया, रणबीर बड़वासणिया, राजेंद्र खरकिया, दयानन्द, बिल्लू (यू.पी.) जैसे अनेक नामी कलाकारों का हरियाणवी रागनी गायन के क्षेत्र में पदार्पण हो चुका था। ऐसे दिग्गजों के बीच मास्टर सतबीर सिंह ने अपने अद्वितीय गायन कौशल और प्रभावशाली अदायगी के बल पर एक विशिष्ट पहचान बनाई। इन सभी विख्यात कलाकारों के साथ उनके अनेक मुकाबले हुए, जिनमें उन्होंने अनेक बार अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए शीर्ष स्थान हासिल किया। अपनी कला में निपुण होने के परिणाम स्वरूप उन्हें राष्ट्रपति भवन में भी प्रोग्राम करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। महाशय पालेराम के साथ उनकी जोड़ी विशेष रूप से श्रोताओं के दिलों में घर कर गई थी। यह अद्भुत युगलबंदी लगभग चार दशकों तक मंचों पर निरंतर अपनी छटा बिखेरती रही। उस दौर में इस जोड़ी की लोकप्रियता अपने चरम पर थी। ग्रामीण परिवेश में लोग अपने पारिवारिक उत्सवों, विशेषकर विवाह जैसे शुभ अवसरों पर इनके कार्यक्रम को अत्यंत आवश्यक मानते थे। स्थिति यह थी कि यदि निर्धारित तिथि पर यह जोड़ी उपलब्ध न हो पाती, तो अनेक परिवार अपने आयोजन की तिथि तक बदल देते थे, ताकि इन दोनों प्रख्यात कलाकारों की शानदार संगीतमयी प्रस्तुति से उनका समारोह और भी भव्य बन सके। मास्टर सतबीर सिंह भैंसवालिया की विशेषता यह रही कि उन्होंने सदैव परंपरागत लोककवियों की रचनाओं को उन्हीं की बनाई, उसी मूल शैली और तर्ज में प्रस्तुत किया। वे अपने गायन में अधिकतर देसी तर्जों का ही प्रयोग करते थे। यद्यपि उन्होंने बाजे भक्त, मांगेराम, मेहरसिंह, दयाचंद, धनपत, आदि सभी प्रतिष्ठित कवियों की रचनाओं को अपना स्वर दिया लेकिन सूर्यकवि पंडित लखमीचंद की कविताई का उन पर सर्वाधिक प्रभाव था। उनकी गायकी में न केवल शुद्धता थी, बल्कि पूर्ण जोश और होश का अद्भुत समन्वय भी देखने को मिलता था। उनकी गायन शैली अत्यंत प्रभावशाली और भावपूर्ण थी। उनके सुरों में सादगी, भावनाओं में गहराई और प्रस्तुति में सहजता दिखाई देती थी। वे रागनी, भजन और लोकगीतों को ऐसी आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करते थे कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। वे मंच पर केवल मनोरंजन के लिए नहीं गाते थे बल्कि अपने गीतों के माध्यम से समाज को नैतिकता, धर्म और संस्कारों का संदेश भी देते थे। मास्टर सतबीर सिंह जीवन भर मर्यादा, संस्कार और धर्म के मार्ग पर चलते रहे। लोक गायन के मंच पर भी उन्होंने कभी अशालीनता या भद्देपन को स्थान नहीं दिया। उनका मानना था कि लोकसंगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि समाज को सही दिशा देने का माध्यम भी है। इसलिए वे अपनी रचनाओं और प्रस्तुतियों में सदैव नैतिकता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व देते थे। यही कारण था कि वे अपने साथियों, शिष्यों और श्रोताओं के बीच अत्यंत सम्मानित एवं लोकप्रिय थे। हरियाणा की लोकसंस्कृति के संवर्धन एवं संरक्षण में उनके विशिष्ट योगदान को मान्यता देते हुए 1 नवंबर 2010 को हरियाणा दिवस के अवसर पर मास्टर सतबीर सिंह को हरियाणा के माननीय राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके समर्पित सेवाकार्य पर शासन की आधिकारिक स्वीकृति का प्रतीक था। 18 जुलाई 2016 को हरियाणा की लोक संस्कृति को एक बड़ा आघात लगा, जब मास्टर सतबीर सिंह का निधन हो गया। लगभग 65 वर्ष की आयु में उन्होंने इस संसार से अंतिम विदा ली। उनके जाने से हरियाणवी लोकगायन की दुनिया में एक ऐसी रिक्तता उत्पन्न हो गई, जिसे भर पाना आसान नहीं है। मास्टर सतबीर सिंह के श्रद्धांजलि स्वरूप उनके शिष्य और प्रसिद्ध लोककवि सुखबीर सिंह बहलंबिया द्वारा रचित अग्रदत्त पंक्तियां, केवल शोकगीत नहीं बल्कि एक युग और लोकधारा के अवसान का भावपूर्ण चित्रण है-

अठारह जुलाई सन् सोलह को,
इसी नजर फिरी भगवान की।
सुबह–सुबह धड़कन बंद होगी,
हरियाणे की श्यान की।

मास्टर सतबीर सिंह भैंसवालिया केवल एक लोकगायक ही नहीं, बल्कि एक आदर्श शिक्षक, कुशल प्रशिक्षक और लोकसंस्कृति के सच्चे संरक्षक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने गाँव में वर्षों तक अखाड़ा भी संचालित किया, जहाँ से कुश्ती के दाव-पेंच सिखाकर अनेक युवाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया। दुनिया में भारत का नाम रोशन करने वाले ओलंपियन पहलवान योगेश्वर दत्त इसका जीवंत उदाहरण हैं। उन्होंने अपने सुरों और शब्दों के माध्यम से समाज को संस्कृति धर्म और मर्यादा का संदेश दिया। हरियाणा की सांस्कृतिक परंपरा में उनका नाम सदैव आदर और सम्मान के साथ लिया जाएगा। उनके द्वारा दी गई सांस्कृतिक विरासत आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा देती रहेगी। उनका जीवन इस सत्य का प्रतीक है कि सच्चे कलाकार कभी मरते नहीं, वे अपने गीतों और अपने संस्कारों के माध्यम से सदैव जीवित रहते हैं। वर्तमान समय में मास्टर सतबीर सिंह की समृद्ध, गौरवशाली संगीत-परंपरा को उनके अनेक शिष्य पूर्ण निष्ठा, समर्पण और आदरभाव के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। अंत में मास्टरजी के लिए यही कहना उपयुक्त होगा-बड़े गौर से सुन रहा था जमाना, तुम्हीं सो गए दास्तां कहते-कहते।

गजल

रामफल गौड़

पहलां आळे गाम रह्ये ना

पहलां आळे गाम रह्ये ना।
राह गोह रां के नाम रह्ये ना।

सौ मैं थेल्ला भरज्या करता,
चीज्जां के वैं दाम रह्ये ना।

करैं हैल्लो हाय, बाय-बाय,
राम सलाम कलाम रह्ये ना।

कुश्ती खाड़े जोर करैं थे,
दारे, चन्दगी राम रह्ये ना।

मौसम नैं बी पाळे बदले,
धूप अबर अर छाम रह्ये ना।

बाजे,ब्यास अर् लखमी साधु,
धनपत , मांगे राम रह्ये ना।

काळा, लील्ला, धोळा, भूरा,
बच्च्याँ के इब नाम रह्ये ना।

भर-भर बुगटे चाब्या करते,
ओह्ळ चणे हे राम रह्ये ना।

दुनियां हो सै आणी-जाणी,
लछमन, सीता,राम रह्ये ना।

राजे अर रजवाड़े उजड़े,
राजशाही निज़ाम रह्ये ना।

कैन्दू, कैम्ब, संभाळू, सीरस।
गुल्लर,हींस इब आम रह्ये ना।

सब कुछ हुया मशीन्नी केसर,
हात्थां आळे काम रह्ये ना।

रागिनी

डॉ. शील कुमार

गाम का चूल्हा

जब भी संकट आया सै, गामां नै राह दिखाई सै।
सीधी-सादी जीवन-शैली, सबकै मन नै भाई सै।।

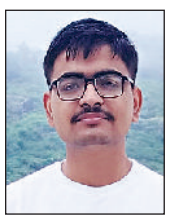

गैस सिलेंडर खातर, शहरां मैं लांबी लैन लगी।
इब क्यूकर होवै गुजारा,या महंगाई की मार घणी।
गामां मैं फेर लौट चलो, उडै कति नहीं महंगाई सै।।
सीधी-सादी जीवन शैली.....

उड़ै देसी चुल्हा जलाकै, यो गैस का संकट मिट ज्यागा।
थोड़े से ईंधन मैं,उडै खीर-चुरमा बण ज्यागा।।
दूध,दही, घी शुद्ध मिलज्यागा, असली मिलै मलाई सै।
सीधी-सादी जीवन शैली.....

माट्टी के चूल्हे मैं,जब धीमी-धीमी आग जलै।
लगैं रोटी मिश्री बरगी, और अमृत जैसा साग लगै।।
चूल्हा जोडै घर के रिश्ते,रूठे मनज्यां भाई सै।
सीधी-सादी जीवन शैली.....

संकट नै अवसर मानकै,हम आगै कदम बढ़ावांगें।
गामां की धरती पै, हम नया इतिहास बणावांगें।।
परंपरा-विज्ञान जोड़कै, शील नै अलख जगाई सै।
सीधी-सादी जीवन शैली.....

जब भी संकट आया सै, गामां नै राह दिखाई सै।
सीधी-सादी जीवन-शैली, सबकै मन नै भाई सै।।

haribhoomisahitya@gmail.com पर आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

आस्था

1699 में इसी दिन गुरु गोविंद सिंह ने आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की थी

शौर्य, श्रद्धा और श्रम का महासंगम है वैशाखी

पर्व

अंकुर शर्मा

हरियाणा की धरती पर ऋतुओं का परिवर्तन केवल मौसम का बदलाव नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन के नए आयामों का उद्घाटन है। चैत्र मास की कोमलता, नवसंवत्सर की नवचेतना और नवरात्रों की शक्ति-साधना जब अपने चरम पर पहुंचती है, तब वैशाख का आगमन होता है। यह केवल एक नया मास नहीं, बल्कि श्रम, पुरुषार्थ और उपलब्धि का उत्सव है। इसी वैशाख संक्रांति का सर्वाधिक उज्ज्वल प्रतीक है वैशाखी। हरियाणा के कृषक जीवन में वैशाखी का विशेष महत्व है।

यह पर्व रबी की फसल, विशेषकर गेहूं की कटाई और उसकी सिद्धि का उत्सव है। महीनों की कठिन मेहनत, ठंडी हवाओं में जागी रातें और तपती धूप में किया गया श्रम इस दिन साकार रूप में सामने आता है। खेतों में लहलहाती सुनहरी बालियां जब हवा के साथ झूमती हैं, तो वह दृश्य केवल प्रकृति की सुंदरता ही नहीं, बल्कि किसान के परिश्रम का जीवंत प्रमाण होता है। इस दिन पहली दरांती चलाने से पूर्व धरती माता और अन्नदेवता का विधिवत पूजन किया जाता है, जो भारतीय कृषि संस्कृति की गहरी आस्था को दर्शाता है।लोक-मानस में वैशाखी को समृद्धि और उल्लास का प्रतीक माना गया है। लंबे परिश्रम के बाद जब किसान की देहली पर अन्न और आर्थिक स्थिरता का आगमन होता है, तो उसके चेहरे पर संतोष और प्रसन्नता का भाव स्वतः झलक उठता है। यह पर्व उस श्रम-साधना का उत्सव है, जिसमें प्रकृति और पुरुषार्थ का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। वैशाखीका एक महत्वपूर्ण पक्ष हरियाणा की सामुदायिक

जीवन-पद्धति में निहित है। इस समय 'अंगा' या सामूहिक श्रम की परंपरा विशेष रूप से देखने को मिलती है। गांव के लोग आपसी सहयोग से एक-दूसरे की फसल काटने में जुट जाते हैं। यह सहयोग केवल कार्य की पूर्ति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और भाईचारे का सशक्त उदाहरण है। खेतों में काम करते समय जब श्रमिक वर्ग छाछ, लस्सी, प्याज और गुड़ के साथ अपनी थकान मिटाता है, तो उसमें श्रम की गरिमा और संतोष की अनुभूति स्पष्ट दिखाई देती है। वैशाखी का महत्व केवल कृषि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय इतिहास और आध्यात्मिक चेतना से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। 1699 में इसी दिन गुरु गोविंद सिंह ने आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की थी। यह घटना भारतीय समाज में साहस, समानता और आत्मसम्मान के नवजागरण का प्रतीक बनी। हरियाणा, जो सदैव वीरता और स्वाभिमान की भूमि रहा है, इस ऐतिहासिक विरासत को आज भी अपनी सांस्कृतिक चेतना में संजोए हुए है। वैशाखी के अवसर पर गुरुद्वारों में विशेष कीर्तन, अरदास और सेवा का आयोजन इस आध्यात्मिक परंपरा को सजीव बनाए रखता है।इस पर्व का एक और जीवंत स्वरूप हरियाणा के मेलों और लोक-उत्सवों में देखने को मिलता है। विभिन्न स्थानों पर लगने वाले मेलों में लोकजीवन की रंगीन झलक दिखाई देती है। दंगल या कुश्ती प्रतियोगिताएं इन मेलों का मुख्य आकर्षण होती हैं। अखाड़े की मिट्टी में उतरते पहलवान केवल अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करते, बल्कि वे उस परंपरा का निर्वाह करते हैं, जिसमें शरीर और आत्मबल दोनों का सम्मान निहित है। ढोल-नगाड़ों की थाप पर गूंजती हुंकारें हरियाणा के पौरुष और उत्साह का परिचायक होती हैं। लोक-नृत्यों और गीतों के माध्यम से भी वैशाखी का उल्लास अभिव्यक्त होता है। झूमर, फाग और अन्य पारंपरिक नृत्य-शैलियां ग्रामीण जीवन की सहजता और आनंद को प्रकट करती हैं। कहीं-कहीं पंजाब के प्रभाव से भांगड़ा की झलक भी देखने को मिलती है, जो इस उत्सव को और अधिक रंगीन बना देती है। मेलों में गन्ने का रस, गुड़ की मिठास और पारंपरिक व्यंजन इस पर्व की स्वादात्मक स्मृतियों को और भी मधुर बना देते हैं।फसल कटाई के पश्चात जब श्रम का दबाव कुछ कम होता है, तब हरियाणा के गांवों में सांस्कृतिक गतिविधियों का विस्तार होता है। 'सांग' या 'स्वांग' की लोक-नाट्य परंपरा इसी समय अधिक सक्रिय हो जाती है। खुले आकाश के नीचे, साधारण मंच पर प्रस्तुत ये लोक-नाट्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं होते, बल्कि वे लोक-इतिहास, नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना के संवाहक होते हैं। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संस्कृति के हस्तांतरण में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वास्तव में वैशाखी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन की उस यात्रा का उत्सव है, जिसमें भावना से उपलब्धि तक और साधना से सिद्धि तक का मार्ग प्रशस्त होता है। यह हमें सिखाती है कि श्रम ही समृद्धि का आधार है और सामूहिकता ही समाज की वास्तविक शक्ति। हरियाणा की माटी में रची-बसी यह परंपरा हमें संदेश देती है कि जब मनुष्य का पुरुषार्थ और प्रकृति की कृपा एक साथ मिलते हैं, तभी जीवन में वास्तविक आनंद और संतोष की प्राप्ति होती है। यही इस पर्व का शाश्वत सत्य और हरियाणा की सांस्कृतिक आत्मा का सार है।

जिंदगी में हार मानना विकल्प नहीं : आकांक्षा भारद्वाज

कलाकार

डॉ. तबस्सुम जहां

हरियाणवी फीचर फिल्म 'दादा लखमी' में बेहद प्यारी-सी मासूम छोटी बहन का किरदार निभाने वाली आकांक्षा भारद्वाज क्षेत्रीय सिनेमा में उभरती हुई कलाकार हैं। गुरुग्राम अरावली शूट के दौरान आकांक्षा से बातचीत का अवसर मिला। वह मशहूर हरियाणवी एल्बम बांदी, राजेश बब्बर निर्देशित कांड 2010 वेबसीरीज़, यशपाल शर्मा निर्देशित 'दादा लखमी' के अलावा रावण, 1600 मीटर, धुंध, प्रेम नगर और सत्या जैसे प्रोजेक्ट में अपने अभिनय से सबको चकित कर चुकी हैं। वह अपने परिश्रम और कर्मठता से अभिनय के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रही हैं। अभिनय के क्षेत्र में आकांक्षा का सफ़र आसान नहीं रहा। उनकी पत्रकार बहन ने उनके अंदर के कलाकार को पहचाना और अभिनय के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया। उसके निधन के बाद उन्होंने थियेटर जॉइन किया। एक थियेटर ही था, जिसने उन्हें संभाला और वहीं से उनके अभिनय की शुरुआत हुई। फिल्म दादा लख्मी से बड़े पर्दे पर उन्हें पहला मौका मिला और बॉलीवुड एक्टर डायरेक्टर यशपाल शर्मा जैसे अनुभवी कलाकार के साथ काम करना उनके लिए प्रेरणादायक रहा।

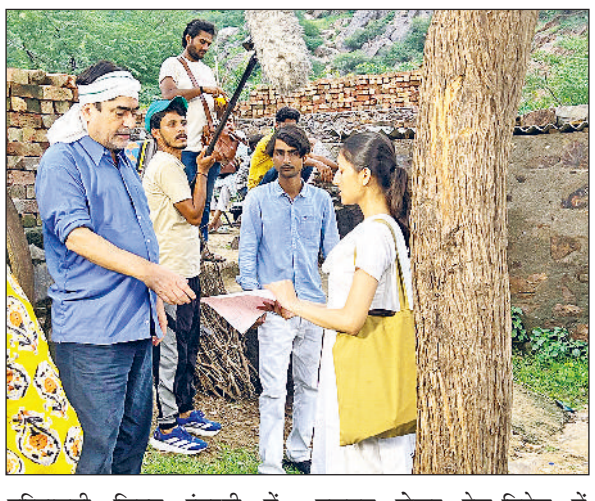

आकांक्षा की अभिनय यात्रा वर्ष 2018 से शुरू हुई थी। उनके अनुसार दीपा थियेटरिस्ट ने उन्हें पहली बार मंच पर बोलना सिखाया था। वह बताती हैं कि पिछले कुछ वर्षों में

हरियाणवी फिल्म इंडस्ट्री में कहानी, तकनीक और गुणवत्ता के स्तर पर काफी सकारात्मक बदलाव आए हैं। दादा लख्मी जैसी फिल्मों ने हरियाणा की संस्कृति और इतिहास को सम्मानजनक तरीके से बड़े स्तर पर प्रस्तुत किया है। अब नए कलाकारों को अवसर मिल रहे हैं और उन्हें विश्वास है कि हरियाणवी सिनेमा आगे और मजबूत होकर देश-विदेश में पहचान बनाएगा। छोटी सी उम्र में ही दादा लखमी फिल्म में अनेक दिग्गज कलाकारों के साथ काम करने के अनुभव के बारे में वह बताती हैं कि इस फिल्म में काम करना उनके लिए बेहद खास और सीखने वाला अनुभव रहा। इसी फिल्म के जरिए उन्हें पहली बार बड़े पर्दे पर खुद को देखने का मौका मिला, जो उनके लिए बहुत गर्व की बात थी। आकांक्षा हरियाणा में तो अनेक प्रोजेक्ट कर चुकी हैं लेकिन वह निश्चित रूप से बॉलीवुड में भी काम करना चाहती हैं। हर कलाकार की तरह उनका भी सपना है कि उन्हें बड़े स्तर पर काम करने का अवसर मिले और वह अपने अभिनय से व्यापक दर्शकों तक पहुंच सके। वह इसके लिए निरंतर प्रयासरत हैं और जब भी अवसर मिलता है, ऑडिशन देती रहती हैं। उनका मानना है कि मेहनत और धैर्य के साथ सही समय आने पर अच्छे अवसर जरूर मिलते हैं। फिलहाल उनका पूरा ध्यान अपने काम को ईमानदारी और पूरी लगन से करते रहने पर है। क्या अभिनय को प्रोफेशन बनाकर काम किया जा सकता है, जैसे प्रश्न पर आकांक्षा का मानना है कि अभिनय को निश्चित रूप से एक पेशे के रूप में अपनाया जा सकता है, लेकिन इसके लिए बहुत धैर्य और अनवरत परिश्रम की जरूरत होती है। यह ऐसा क्षेत्र है जहां सफलता तुरंत नहीं मिलती, इसलिए सबसे ज़रूरी है कि इंसान अपने धैर्य को बनाए रखे और अपने काम में लगातार मेहनत करता रहे। स्वयं उनके शब्दों में - अगर आपके अंदर सीखने की इच्छा है, अपने काम के प्रति ईमानदारी है और आप हर अनुभव से कुछ नया सीखते रहते हैं तो अभिनय को एक मजबूत और सम्मानजनक प्रोफेशन बनाया जा सकता है। आकांक्षा हरियाणा में आने वाले समय में अनेक संभावनाएं देखती हैं हरियाणा में अभिनय और एंटरटेनमेंट के अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं, खासकर सोशल मीडिया और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के कारण नए कलाकारों को पहचान मिल रही है। आज स्टेज एप, सुपवा तथा हरियाणवी कलाकारों की मेहनत और लगन से हरियाणा की भाषा और संस्कृति व फिल्मों को देश-विदेश में पहचान मिल रही है।

साबित करना है कि बेटियां किसी से कम नहीं होती

एक बेटी के रूप में आकांक्षा साबित करना चाहती हैं कि बेटियां किसी से कम नहीं हैं। हर चुनौती और हर अनुभव ने उन्हें यह सिखाया है कि अगर इरादा मजबूत हो, मेहनत सच्ची हो, तो कोई भी मुश्किल हमें रोक नहीं सकती। मैं अपनी कला के ज़रिए लोगों तक अपनी सोच, अपनी भावनाएं और अपनी मेहनत पहुंचाना चाहती हूं।

खबर संक्षेप

कप्तान सरजीत जेवली के निधन पर शोक जताया

बाढ़ड़ा। गांव जेवली निवासी कप्तान सुरजीत श्योराण का 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन पर अनेक सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने पहुंचकर गहरी संवेदना व्यक्त की। कप्तान सुरजीत सिंह लंबे समय तक भारतीय सेना में सेवारत रहे तथा चीन, पाक युद्धों में कंपनी का नेतृत्व किया। सेवानिवृत्ति के बाद वह सामाजिक सेवाओं में अग्रणी रहे। उनके निधन पर पूर्व विधायक सोमवीर श्योराण, प्रज्ञा शिक्षण समिति अध्यक्ष कृष्ण जेवली, कप्तान शिबलाल, समाजसेवी मुकेश जेवली, सरपंच सोमेश श्योराण आदि ने शोक जताया।

कैप्टन रामकिशन का 81 की आयु में निधन

बहल। गांव चैहड़ खुर्द में भारतीय सेना में कैप्टन रहे रामकिशन श्योराण का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन से क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई है।

फाइल फोटो।

कैप्टन रामकिशन श्योराण एक सम्मानित सामाजिक एवं पंचायती व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में किसानों और पूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए अनेक सराहनीय कार्य किए।

भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते हुए।

पीएम ने देश तरक्की की नए आयाम स्थापित किए

भिवानी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश तरक्की के नए आयाम स्थापित कर रहा है तथा अंत्योदय को समर्पित योजनाएं हर घर तक पहुंच रही हैं। ये विचार भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मीना परमार ने गांव बपोड़ा में गांव चलो - बस्ती चलो अभियान के तहत लोगों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। कार्यक्रम का आयोजन डॉक्टर सतपाल द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक ने की।

साइकिल रैली निकालकर दिया फिट रहने का संदेश

भिवानी। भारतीय खेल प्राधिकरण (साईं) के खेल प्रशिक्षण केंद्र भिवानी, मेरा भारत, एनसीसी एवं स्काउट गाइड के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को संडेज ऑन साइकिल कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य समाज में फिटनेस के प्रति जागरूकता फैलाना था। कार्यक्रम में एनसीसी 11 बटालियन के सूबेदार उमेश सिंह, हवलदार पंकज सिंह, वैश्य कॉलेज की लेफ्टिनेंट डॉ. रीना, भारत स्काउट्स एंड गाइड के सहायक ग्रुप लीडर अमित कुमार आदि मौजूद रहे।

रामबाग 'श्मशानघाट' को मंदिर जैसा लुक दे रही समिति

दीपक कुमार डुमड़ा ▶▶| बवानीखेड़ा

रामबाग के विकास को लेकर चेयरमैन ने दिया आश्वासन, जल्द होंगे सुधार कार्य

बवानीखेड़ा के रामबाग स्थित श्मशानघाट में लंबे समय से चल रही व्यवस्थाओं और सुविधाओं को लेकर अब सुधार की उम्मीद जगी है। श्मशानघाट की देखरेख समिति के सदस्य, जिनमें डॉ. बूटाराम धमीजा, बीएसएनएल से सेवानिवृत्त जेई नंदलाल महता, समाजसेवी प्रेम ओड, बोधराज मेहता, रमन कुमार टुटेजा, राजेंद्र बबलू सहित अन्य लोगों के द्वारा यहां निरंतर सेवा कार्य किया जा रहा है। समिति के प्रयासों से रामबाग परिसर में साफ-सफाई के साथ-साथ फल-फूल के पौधों की देखभाल भी की जा रही है और इसमें पौधों को पानी डालकर सींचने का कार्य किया जाता है, जिससे यह स्थान एक शांत और व्यवस्थित वातावरण प्रदान करता है। परिसर में भगवान की मूर्तियां भी स्थापित की गई हैं, जो श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र बनी हुई हैं।

बवानीखेड़ा। शमशान घाट में पौधों में पानी डालते हुए। फोटो : हरिभूमि

सभी ने इसी स्थान पर आना-शहरवासियों ने बताया कि सभी ने अंतिम समय में यहीं पर आना है इसलिए रामबाग की व्यवस्था किसी मंदिर से कम नहीं होनी चाहिए और हांसी-भिवानी मार्ग पर इस रामबाग में समस्त समुदायों का व राजनीति में नेताओं का विशेष सहयोग होता है। सभी ने इसके कार्य में सहयोग की अपील की।

नपा चेयरमैन ने अधिकारियों संग किया दौरा

बीते दिनों में नगर पालिका चेयरमैन सुंदर अत्री ने नपा कर्मचारियों व अधिकारियों संग रामबाग का दौरा कर वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने समिति सदस्यों और स्थानीय लोगों से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं। चेयरमैन ने आश्वासन दिया कि श्मशान घाट में जल्द ही कई आवश्यक विकास कार्य करवाए जाएंगे, जिससे यहां आने वाले लोगों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें। उन्होंने बताया कि परिसर में शौचालय का निर्माण कराया जाएगा, ताकि स्वच्छता बनी रहे। इसके अलावा मिट्टी भरत कर समतलीकरण का कार्य भी किया जाएगा, जिससे रास्ते सुगम हो सकें। आने-जाने के लिए पक्की सड़क बनाने, शेड का निर्माण करने और पहले से बने शेड की मरम्मत करवाने, 20 कुर्सियां की व्यवस्था करवाने आदि का भी भरोसा दिया गया। वहीं, बिजली की व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए वायरिंग कार्य भी कराया जाएगा, ताकि रात के समय किसी प्रकार की परेशानी न हो।

सहयोग की अपील

विशेष रूप से बच्चों की मृत्यु के मामलों को ध्यान में रखते हुए उनके लिए अलग और सुरक्षित स्थान विकसित करने की बात भी कही गई है। इससे परिवारों को मानसिक रूप से थोड़ी राहत मिल सकेगी और व्यवस्थाएं अधिक संवेदनशील बनेंगी। स्थानीय लोगों ने नगर पालिका के इस आश्वासन का स्वागत किया है और उम्मीद जताई है कि जल्द ही ये सभी कार्य धरातल पर दिखाई देंगे। समिति सदस्यों ने भी प्रशासन से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि यदि सभी मिलकर प्रयास करें, तो रामबाग श्मशान घाट को एक आदर्श स्थल बनाया जा सकता है।

किसानों के समर्थन में जजपा आज करेगी विरोध-प्रदर्शन

बाढ़ड़ा। सरकार ने मंडियों में अनाज खरीद पर जो शर्तें थोंपी हैं, वो किसान विरोधी हैं। इन शर्तों के खिलाफ जजपा के पदाधिकारी व कार्यकर्ता सोमवार 11 बजे बाढ़ड़ा अनाजमंडी में प्रदर्शन करेगी, ये जानकारी जजपा जिला प्रेस प्रवक्ता राजेंद्र व किसान प्रकोष्ठ हल्का अध्यक्ष सुखवंत बेरला ने दी।

उन्होंने कहा प्रदर्शन में मुख्यतिथि किसान प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष नरेश द्वारका व अध्यक्षता किसान प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष राजबीर फोगाट करेंगे। प्रदर्शन में जजपा के सभी वरिष्ठ कार्यकर्ता व पदाधिकारी शामिल होंगे और रोष प्रदर्शन में बढ़ चढ़कर भागीदारी करेंगे।

ग्रामीणों ने डीसी को पत्र लिखकर तबादले की मांग की

पटवारी न मिलने से लोगों को उठानी पड़ रही है परेशानियां

सप्ताह में केवल एक दिन ही कार्यालय में बैठता है पटवारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहल

बहल कस्बे में पटवारी की लगातार अनुपस्थिति से ग्रामीणों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा पटवारी कार्यालय में विभिन्न कार्यों को लेकर लगाई गई सूची पट्टिका भी साफ हो चुकी है।

इस संबंध में ग्रामीणों ने उपायुक्त भिवानी को पत्र लिखकर मौजूदा पटवारी के तबादले और नए योग्य एवं अनुभवी पटवारी की नियुक्ति की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया कि बहल गांव की आबादी लगभग 40 हजार है और करीब 6 हजार किला जमीन है।

बहल। बहल में पटवार घर में लटका ताला और सूचना बोर्ड पर मिटे कार्य के निर्धारित रेट। फोटो : हरिभूमि

योग्य को सौंपे भार

सोशल वर्कर राजेश अग्रवाल ने पत्र लिखकर उपायुक्त से मांग की है कि वर्तमान पटवारी को हटाकर किसी योग्य और अनुभवी पटवारी को बहल का कार्यभार सौंपा जाए, ताकि लोगों के कार्य समय पर हो सकें और राजस्व रिकॉर्ड सुरक्षित रह सके।

टालमटोल

पत्र में यह भी आरोप लगाया गया कि पटवारी सही कार्य करने में भी टालमटोल करता है और गांव का राजस्व रिकॉर्ड निजी लोगों को फोटो कॉपी के लिए दे देता है, जिससे रिकॉर्ड की स्थिति खराब हो रही है और उसकी सुरक्षा भी खतरे में है। ग्रामीणों ने विभिन्न कार्यों के लिए लगाई सूची पट्टिका को फिर से लिखवाने की मांग की है

गांव में सरकारी पटवार घर बना हुआ है, जिसमें दो पटवारियों के पद स्वीकृत हैं, लेकिन वर्तमान में केवल एक पटवारी कार्यरत है। आरोप है कि वह सप्ताह में केवल एक दिन ही कार्यालय में बैठता है, जिससे लोगों के कार्य प्रभावित हो रहे हैं। ग्रामीणों के अनुसार, ट्रेनी पटवारी कभी-कभार कार्यालय खोलते हैं, लेकिन उनके पास हस्ताक्षर करने का अधिकार नहीं है। पिछले वर्षों की रजिस्ट्रियों के इंतकाल भी लंबित पड़े हैं और अधिकांश समय पटवार घर बंद मिलता है। लोगों को अपने कामों के लिए बार-बार चक्कर लगाने पड़ रहे हैं।

राष्ट्रीय परिवर्तन पार्टी ने उठाई महिलाओं को आरक्षण देने की मांग

भिवानी। केंद्र सरकार ने लोकसभा व विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने के ऐतिहासिक कदम पर अब राजनीतिक रार छिड़ गई है। राष्ट्रीय परिवर्तन पार्टी के अध्यक्ष लीलाराम प्रजापति ने बिल के मौजूदा स्वरूप को अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग की महिलाओं के साथ मजाक और विश्वासघात करार दिया है।

प्रजापति ने कहा कि भाजपा सरकार केवल कागजों पर महिला सशक्तिकरण की बात कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि 33 प्रतिशत आरक्षण के भीतर एससी एवं बीसी महिलाओं के लिए अलग से कोटा निर्धारित न करना उनकी राजनीतिक हत्या करने जैसा है। उन्होंने कहा कि दबे-कुचले समाज की महिलाएं आज भी राजनीति की मुख्यधारा से बाहर रहेंगी। पार्टी ने स्पष्ट किया कि वे इस अन्याय को चुपचाप सहन नहीं करेंगे। प्रजापति ने चेतावनी दी कि सरकार ने जल्द ही इसमें सुधार कर अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग की महिलाओं के लिए आनुपातिक हिस्सेदारी तय नहीं की, तो पार्टी विरोध प्रदर्शन करेगी।

खबर संक्षेप

43,814 क्विंटल गेहूं की आवक, 4125 का उठान

बाढ़ड़ा। अनाजमंडी में अब तक 43,814 क्विंटल गेहूं की आवक हुई है और 4833 क्विंटल गेहूं की खरीद हो पाई है। वहीं अब तक 4125 क्विंटल गेहूं का ही उठान हुआ है।

अनाजमंडी में सरसों के तीन गेट पास काटे और अब तक 142 क्विंटल सरसों की आवक हुई है। रविवार को 190 किसानों के गेट पास काटे गए, जिनमें तीन सरसों के शामिल हैं और 8230 क्विंटल की आवक हुई है। अब तक 123 किसानों का 1191 क्विंटल गेहूं का उठान हुआ है। अब तक 996 किसानों के गेट पास काटे गए, जिनसे 43814 क्विंटल गेहूं की आवक हुई है। मंडी सुपरवाइजर जयप्रकाश सांगवान ने बताया कि अब तक किसानों के गेहूं के 996 गेट पास काटे है, जिनमें 43814 क्विंटल गेहूं की आवक हुई है। अब तक 4833 क्विंटल गेहूं की खरीद हो चुकी है तथा 4125 क्विंटल गेहूं का उठान हुआ है।

सूरपुरा व बिधनोई में चलाया जनसम्पर्क अभियान

बहल। भारतीय जनता पार्टी द्वारा 7 अप्रैल से 12 अप्रैल तक चलाए जा रहे "गांव चलो, बस्ती चलो" अभियान के अंतर्गत मार्केट कमेटी बहल के चेयरमैन रवि महमिया ने बहल मंडल के गांव पातवान तथा ढिगावा मंडल के गांव सूरपुरा व बिधनोई में व्यापक जनसंपर्क किया। इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों से संवाद स्थापित कर केंद्र व प्रदेश सरकार की जनहितकारी नीतियों और योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी। रवि महमिया ने घर-घर जाकर लोगों से मुलाकात की और सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत योजना, किसान सम्मान निधि सहित अन्य कल्याणकारी कार्यक्रमों के लाभों के बारे में बताया।

किसानों का उत्पीड़न बंद करे सरकार: उमेश

बवानीखेड़ा। कांग्रेस नेता उमेश भारद्वाज ने आज हरियाणा की अनाज मंडियों में फसल खरीद के दौरान किसानों को आ रही तकनीकी समस्याओं पर गहरी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने सरकार द्वारा लागू की गई बायोमेट्रिक हाजिरी प्रणाली को किसान विरोधी करार देते हुए कहा कि यह तकनीक मदद के बजाय किसानों के लिए मुसीबत बन गई है। उमेश भारद्वाज ने यह बाते किसानों से मिलते हुए कहीं। उन्होंने कहा है बायोमेट्रिक की विफलता मंडियों में सर्वर डाउन होने और बुजुर्ग किसानों के फिंगरप्रिंट मैच न होने के कारण घंटों लाइन में खड़ा रहना पड़ रहा है, जिससे फसल खरीद की प्रक्रिया बाधित हो रही है।

नायब तहसीलदार ने किया मंडी का निरीक्षण

तोशाम। नायब तहसीलदार अशोक कुमार ने रविवार को अनाजमंडी तोशाम व खरीद केंद्र पटौदी का दौरा किया तथा खरीद प्रक्रिया संबंधी सभी व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने आढ़तियों और खरीद एजेंसियों के साथ बात की और जरूरी निर्देश भी दिए। नायब तहसीलदार अशोक कुमार ने कहा कि खरीद प्रक्रिया को सुविधाजनक और पारदर्शी बनाने के लिए प्रशासन पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने मंडी में फसल खरीद के साथ उठान के लिए विशेष कार्य योजना बनाकर कार्य के निर्देश दिए। नायब तहसीलदार ने मंडी में खरीद एजेंसियों से खरीद और किसानों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। उन्होंने किसानों से अपील की कि सभी किसान तय नमी के अनुरूप फसल सुखाकर मंडी में लाएं ताकि उन्हें किसी भी प्रकार की कोई परेशानी न हो।

पूर्व विधायक ने लिया सरसों की खरीद का जायजा

बहल। इनेलो के पूर्व विधायक ओमप्रकाश बडवा ने रविवार को बहल अनाज मंडी में पहुंचकर सरसों की सरकारी खरीद व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मंडी परिसर में विभिन्न खरीद केंद्रों का निरीक्षण किया और किसानों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं। किसानों ने उन्हें खरीद प्रक्रिया में देरी, भुगतान में विलंब, बायोमेट्रिक सत्यापन में आ रही दिक्कतों और अन्य तकनीकी खामियों के बारे में अवगत कराया। पूर्व विधायक बडवा ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा लागू की गई बायोमेट्रिक प्रणाली और जटिल नियमों के चलते किसानों को अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार की नीतियां किसानों के हित में नहीं हैं, बल्कि उन्हें उलझाने का काम कर रही हैं।

जाटू लोहारी में चलाया जनसम्पर्क अभियान

भिवानी। 26 अप्रैल को बवानीखेड़ा टोल प्लाजा पर आयोजित होने वाली महापंचायत की सफलता को लेकर हरियाणा जागृति मोर्चा ने अनेक सामाजिक संगठनों ने गांव लोहारी जाटू में जनसम्पर्क अभियान चलाया। लोगों को उक्त महापंचायत में पहुंचने का न्यौता दिया। इस दौरान गांव में कई जगहों पर बैठकों का दौर जारी रहा और लोगों में उक्त महापंचायत को लेकर जबरदस्त उत्साह देखा गया। इस मौके पर गांव लोहारी जाटू निवासी राजेंद्र धायल व धर्मपाल ने कहा कि बवानीखेड़ा से जाटू लोहारी के खेतों की दूरी महज दो से ढाई किलोमीटर है। चूंकि बवानीखेड़ा व जाटू लोहारी गांव के खेतों की सीमा हैरानी की बात यह है कि इतनी दूरी का फासल होने के बावजूद भी जाटू लोहारी के लोगों को वाहनों में टोल टैक्स में छूट नहीं दी जा रही है।

एटीओ अंकित सांगवान को किया सम्मानित

चरखी दादरी। भिवानी की जाट धर्मशाला में आयोजित जाट प्रतिभा सम्मान समारोह में एटीओ अंकित सांगवान को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। समारोह में मुख्यातिथि के रूप में लेफ्टिनेंट कर्नल सुखदीप सांगवान उपस्थित रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता चंद्र सिंह आर्य ने की और मंच संचालन कमल प्रधान ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। अंकित सांगवान को उनकी प्रशासनिक सेवाओं में बेहतर प्रदर्शन और समर्पण के लिए मंच पर सम्मान प्रदान किया गया।

डा. भीमराव आंबेडकर के आदर्शों पर चलने का दिलाया संकल्प

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डा. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष्य में जाटू खाप-84 द्वारा रविवार को गांव बड़ेसरा में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के ओएसडी विरेंद्र बडखालसा, बवानीखेड़ा से विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि, भाजपा जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा बाबा साहेब डा. अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। इस दौरान उपस्थित ग्रामीणों ने बाबा साहेब के दिखाए मार्ग पर चलने और राष्ट्र की एकता व तरक्की में अपना पूर्ण योगदान देने का संकल्प लिया। वक्ताओं ने बाबा साहेब के जीवन संघर्षों और उनके द्वारा समाज सुधार के लिए किए गए ऐतिहासिक कार्यों से जनता को रूबरू कराया। कार्यक्रम के संयोजक नरेंद्र तालु रहे।

- बाबा साहेब के पदचिह्नों पर चलकर राष्ट्र निर्माण कर रही है भाजपा सरकार : विरेंद्र बड़खालसा

सीएम ओएसडी वीरेंद्र बडखालसा, विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि व जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने कहा कि बाबा साहेब का जीवन और उनके विचार आज भी करोड़ों भारतीयों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बाबा साहेब के अंत्योदय के सपने को साकार कर रही है।

भिवानी। एकत्रित लोगों को संबोधित करते हुए।

बाबा साहेब की सीख को अपनाएं

कार्यक्रम के दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने इतिहास के पन्नों को पलटते हुए ग्रामीणों के सामने एक महत्वपूर्ण तथ्य रखा। उन्होंने बताया कि किस प्रकार कांग्रेस ने बाबा साहेब के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न की थीं। कौशिक ने कहा कि वर्ष 1952 के चुनाव में कांग्रेस ने बाबा भीमराव अंबेडकर के खिलाफ अपना उम्मीदवार उतारा था और उनके खिलाफ चुनाव लड़ा था। यह दर्शाता है कि बाबा साहेब के प्रति किसका नजरिया क्या रहा है। लेकिन आज कांग्रेस संविधान बचाने के नाम लोगों को तरह-तरह से गुमराह करने का काम कर रही है, जबकि हकीकत तो यह है कि भाजपा ने हमेशा से बाबा साहेब के आदर्शों पर चलते हुए जनहित की सोच रखी तथा कार्य किए। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे बाबा साहेब की शिक्षित बनने और संगठित रहने की सीख को अपने जीवन में उतारें।

भक्ति के सागर में डूबी छोटी काशी

रुकमणी विवाह के प्रसंग ने भक्तों को किया भावविभोर

भिवानी। आयोजित सत्संग में उपस्थित श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

छोटी काशी के नाम से विख्यात भिवानी शहर इन दिनों पूरी तरह अध्यात्म और भक्ति के रंग में रंगा हुआ है। स्थानीय हनुमान जोहड़ी मंदिर परिसर में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा में श्रद्धा, उल्लास और सामाजिक संकल्प का एक अनूठा संगम देखने को मिल रहा है।

कथा के दौरान रुकमणी मंगल विवाह के दौरान पूरा पंडाल जयकारों से गूंज उठा और भक्त भक्ति रस में सराबोर नजर आए। व्यासपीठ पर विराजमान कथावाचिका साध्वी विभानंद सरस्वती ने भगवान श्रीकृष्ण और माता रुकमणी के विवाह की कथा का अत्यंत मार्मिक और सजीव वर्णन किया। रुकमणी मंगल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए साध्वी ने वैवाहिक जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को साझा किया। उन्होंने कहा कि विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि एक मंगल वचन है। यह मर्यादा, समर्पण और अटूट विश्वास का प्रतीक है। साध्वी ने रुकमणी विवाह के माध्यम से यह संदेश दिया कि जब भक्त पूर्ण विश्वास के साथ परमात्मा को पुकारता है तो भगवान स्वयं उसे अपनाने चले आते हैं। कथा के दौरान रुकमणी विवाह की झांकी निकाली गई, जिस पर भक्तों ने पुष्प वर्षा कर अपनी खुशी का इजहार किया। यह आयोजन बालयोगी महंत चरणदास महाराज के सान्निध्य में अढ़ाई कोसी नगर परिक्रमा के सफलतापूर्वक 12 महीने पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित की जार रही है।

परमसंत सतगुरु कंवर साहेब महाराज ने प्रवचनों से किया निहाल

जुटाया गया एक तिनका भी हमारे साथ नहीं जाएगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जिस झूठी मान बड़ाई के लिए हम दिन रात पाप कमाते हैं उस से जुटाया गया एक तिनका भी हमारे साथ नहीं जाएगा। हम कष्ट उन वस्तुओं के लिए उठाते है जो यहीं रह जायेंगे। जो साथ जाएगा उसके लिए तो हम प्रयास ही नहीं कर रहे। जो साथ जाएगा वो है परमात्मा का नाम । सतनाम के साथ ऐसी विरह पैदा करो जैसे पतंग दीपक के लिए करता है,भँवरा फुल के लिए,चकोर चाँद के लिए करता है। ये विरह तब तक नहीं आएगी जब तक मन के साथ चलोगे। ये विरह पैदा होगी गुरुमुखता के साथ। मन की नहीं गुरु की मानो। यह सत्संग वचन बैसाखी के अवसर पर परमसंत सतगुरु कंवर साहेब महाराज ने हांसी के भिवानी रोड पर स्थित राधास्वामी आश्रम में फरमाए। हुजूर कंवर साहेब महाराज ने उपस्थित संगत की हाजरी को आने वाली बैसाखी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हिंदुस्तान कृषि प्रधान ऐसा देश है जहां भक्ति का सच्चा और खालिश स्वरूप मिलता है। बैशाखी कृषि कार्यो से जुड़े और भक्ति मार्ग पर चलने वालों के लिए पाक पवित्र दिन है। गुरु महाराज ने कहा कि कलिकाल में हालात बड़े विकट हैं। नशे विषयो की भरमार हैं। इंसान इंसान को धोखा दे रहा है। चरित्र का ह्रास होता जा रहा है । रिश्ते नातो की कद्र घटती जा रही है। ऐसे में इंसान के लिए सन्तो का सत्संग ही एकमात्र सहारा है।

सत्संग को समझने वाला तो स्वयं तो क्या औरो का भी भला कर जाता है। सत्संग में हाजरी तो विशाल होती है लेकिन सुधरता कोई नहीं दिखता इसका एक ही कारण है कि हम संत सतगुरु की शरण में केवल दुनिया के सुख ढूँढने जाते हैं परंतु भक्ति की आस नहीं रखते। हुजूर ने कहा कि हर किसी का संकल्प पूरा होता है। विद्यार्थी विद्या में,व्यापारी व्यापार में नौकर नौकरी में संकल्प धार कर अपनी तरक्की कर लेता है तो क्यों ना हम भक्ति का भाव रखें। उन्होंने कहा कि अफ़सोस यह है की सत्संग की सार कोई कोई ही जानता है । जिसने सत्संग की सार को पा लिया उसने हर पदार्थ को पा लिया। ज्ञान क्या पता कब आ जाये क्या पता कब आपके मन में परमात्मा के प्रति विरह जाग जाये इसलिए हमेशा सचेत रहो।

अंदर की बुराइयां मिटाएं

हुजूर कंवर साहेब जी ने फ़रमाया कि लग्न लगे बिना सत्संग सतगुरु और सतनाम समझ नहीं आएगा। इस झूठी दुनिया में एकमात्र सत्य सत्संग है और इस सत्य को समझने वाले को ही सतगुरु कहते हैं। सतगुरु का सत्संग सतनाम का गुणगान है। पाप-पुण्य भला-बुरा जान लेना ज्ञान और कर्म कांड है लेकिन सतनाम को पा कर उसे जान लेना भक्ति है। सतनाम को जान कर ही आप परोपकार और परमार्थ के मार्ग पर चल सकते हैं। गुरु महाराज ने कहा कि सत्संग आपके अंतर में तभी फलेगा जब अपने अंदर से हम बुराइयां मिटा लेंगे। उन्होंने कहा भगत को अपने अंतर में भक्ति का बीज बोन से पहले अंतर की सफ़ाई कर लेनी चाहिए।

रैली में उमड़ी भीड़ ने बढाया सुनील सांगवान का राजनीतिक कद, सीएम के 'भरोसे' ने बदले समीकरण

सीएम सैनी की 'विकसित' रैली ने खोले दादरी 'विकास के द्वार'

प्रवीन शर्मा ▶▶| चरखी दादरी

हरियाणा की राजनीति में चरखी दादरी का मैदान अक्सर बड़े उलटफेरों का गवाह रहा है, लेकिन हालिया 'विकसित दादरी रैली' ने एक नए राजनीतिक नेतृत्व के उदय पर मुहर लगा दी है। विधायक सुनील सांगवान द्वारा आयोजित रैली ने न केवल भारी भीड़ जुटाकर विपक्ष को चौंकाया, बल्कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की सार्वजनिक प्रशंसा बटोरकर यह भी साफ कर दिया कि सत्ता के गलियारों में सांगवान का दबदबा बढ़ रहा है। वहीं रैली में विधायक श्री सांगवान की मांगों की बदौलत सीएम ने घोषणाओं का पिटारा ही नहीं,बल्कि दादरी के विकास द्वार खोल दिए। विकसित रैली में उमड़ी भीड़ से प्रदेश के मुखियां ही नहीं बल्कि केंद्रीय नेताओं की नजर में भी विधायक सांगवान का अच्छा खासा कद बढ गया। रैली का सबसे चर्चित क्षण वह रहा जब मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सुनील सांगवान को विशेष रूप से अपने पास बुलाकर न केवल उनकी कार्यशैली की सराहना की, बल्कि प्रबंधन के लिए उनकी पीठ भी थपथपाई। राजनीतिक गलियारों में सीएम के इस व्यवहार को 'स्पष्ट राजनीतिक संकेत' माना जा रहा है। मुख्यमंत्री ने स्वीकार किया कि सांगवान जिस प्रखरता से दादरी की समस्याओं को चंडीगढ़ में उठाते हैं, उसी का परिणाम है कि आज क्षेत्र को करोड़ों की ग्रांट मिल रही है। रैली में उमड़ी किसानों, महिलाओं और युवाओं की भीड़ ने यह सिद्ध कर दिया कि वे केवल विरासत के सहारे नहीं, बल्कि जमीन पर अपनी पकड़ मजबूत कर चुके हैं।

चरखी दादरी। सीएम नायब सिंह सैनी से गुफ्तगू करते विधायक सुनील सांगवान।

जिले के विकास को मिलेगी नई गति

सांगवान ने केवल भीड़ ही नहीं जुटाई, बल्कि मुख्यमंत्री के सामने दादरी की 'दुखती रग' पर हाथ भी रखा। उन्होंने जलभराव, सिंचाई के लिए टेल तक पानी, सड़कों के सुदृढ़ीकरण और बाईपास जैसे मुद्दों को पुरजोर तरीके से उठाया। जवाब में सीएम ने भी दरियादिली दिखाते हुए कई सौ करोड़ रुपये की परियोजनाओं की घोषणा कर सांगवान की झोली खुशियों से भर दी। घोषणाओं की सौगात मिलने के बाद दादरी के विधायक ही नहीं जनता भी गदगद नजर आई। चूंकि अभी तक रैलियों में इतनी घोषणाएं कभी नहीं हुई।

भीड़ देखकर विधायक हुए भावुक

रैली की अभूतपूर्व सफलता के बाद विधायक सुनील सांगवान भावुक नजर आए। उन्होंने कार्यकर्ताओं और आम जनता का आभार जताते हुए कहा कि रैली में उमड़ा जनसैलाब इस बात का प्रमाण है कि दादरी की जनता विकास और ईमानदारी की राजनीति के साथ है। उन्होंने कहा, मैं मुख्यमंत्री जी का आभारी हूँ जिन्होंने मेरी मांगों पर तुरंत मुहर लगाई। अब दादरी के विकास का पहिया और तेजी से घूमेगा। मेरे लिए राजनीति केवल पद नहीं, बल्कि अपने पिता के संकल्पों को पूरा करने और क्षेत्र की सेवा करने का माध्यम है। हर नागरिक का यह प्रेम ही मेरी असली ताकत है।

खुला दरबार लगाकर पांच दिन सुनते है समस्याएं

सप्ताह में पांच दिन अपने कैम्प कार्यालय में खुला दरबार लगाकर लोगों की समस्याएं व शिकायतें सुनते है। इस दौरान अधिकारी भी मौजूद रहते है। लोगों की शिकायतों को मौके पर ही समाधान करवाने का प्रयास करते है। अगर कोई समस्या या योजना का प्रस्ताव है तो वे उसको लेकर चंडीगढ जाते है। वहां पर हलके के कार्यो को पूरा करवा कर लौटते है। सप्ताह में पांच दिनों तक जनता के बीच रहने का फायदा विकसित रैली में देखने को मिला। लोगों से जुड़ाव की वजह से रैली में इतनी भीड़ पहुंची।

दिल्ली में मंथन, बड़े प्रोजेक्ट पर चर्चा

रैली फाइनल होते ही विधायक सुनील सांगवान ने दिल्ली पहुंचकर पूर्व मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने दादरी की सीसीआई जमीन पर बड़े प्रोजेक्ट को लेकर विस्तृत चर्चा की। साथ ही विकसित दादरी रैली की रूपरेखा और रणनीति पर भी मंथन किया। इस मुलाकात को दादरी में भविष्य के बड़े निवेश और विकास परियोजनाओं की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। युवाओं का जबरदस्त उत्साह देखने को मिला, रैली में उनकी संख्या सबसे अधिक रही।

शहीद क्रांतिकारी दिवस कार्यक्रम को लेकर सौंपी जिम्मेदारी

लोहारू। 13 अप्रैल को बहल में शहीद भगत सिंह चौक पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर रविवार को लोहारू में शहीद भगत सिंह कल्याण समिति और शहीद भगत सिंह युवा ब्रिगेड की संयुक्त बैठक आयोजित हुई।

बैठक में कार्यक्रम को लेकर कार्यकर्ताओं को विभिन्न जिम्मेदारियों सौंपी गई। महासचिव राजेश शेखावत की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में प्रधान जगदीश जायलवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम में शहीद-ए-आजम भगत सिंह के पौत्र एवं ऑल इंडिया शहीद भगत सिंह ब्रिगेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष यादविंदर सिंह संधू और पूर्व मंत्री जयप्रकाश दलाल बतौर मुख्य अतिथि शामिल होंगे। उन्होंने बताया कि ब्लाक समिति बहल के चेयरमैन विजय फौगाट के संयोजन में आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में एसडीएम मनोज दलाल, सोमबीर कादयान सहित अनेक लोग मौजूद रहेंगे। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में लोहारू में अनेक युवा शामिल होंगे तथा लोहारू से करीब 9 बजे शहीद भगत ड्रूषसह चौक से युवाओं का जत्था बहल के लिए रवाना होगा। बैठक में कार्यकर्ताओं को अनेक जिम्मेदारियां सौंपी गई।

कीर्गिस्तान में सीनियर एशिया रेसलिंग कुश्ती चैम्पियनशिप आयोजित

सीनियर एशिया चैम्पियनशिप में सुजीत कलकल ने जीता गोल्ड

एशिया के अलग-अलग देशों से आए हुए पहलवानों ने अपना दमखम दिखाया

- उज्बेकिस्तान के पहलवान को एकतरफा रूप से 8-1 के बड़े अंतर से करारी हार दी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

चरखी दादरी। सीनियर एशिया चैम्पियनशिप में दांव-पेंच लगाते सुजीत कलकल।

गांव इमलोटा के होनहार पहलवान सुजीत कलकल ने एक बार फिर से पूरे क्षेत्र के नाम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया है। हाल ही में कीर्गिस्तान में सीनियर एशिया रेसलिंग कुश्ती चैम्पियनशिप के दौरान युवा सुजीत कलकल ने गोल्ड मेडल जीता है। सुजीत की जीत पर मौजिज लोगों ने बधाई दी।

जिला कुश्ती संघ के सचिव योगेश इमलोटा ने बताया कि हाल ही में ये बडी प्रतियोगिता संपन्न हुई, जिसमें पूरे एशिया के अलग अलग देशों से आए हुए पहलवानों ने अपना दमखम दिखाते हुए चुनौती रखी थी। सुजीत कलकल ने 65 किलोग्राम भारवर्ग में शानदार प्रदर्शन कर गोल्ड जीता और खिताबी चरण तक शानदार प्रदर्शन किया। वहीं सुजीत ने सीनियर एशिया रेसलिंग कुश्ती चैम्पियनशिप का फाइनल मुकाबला भी एकतरफा जीता। सुजीत कलकल ने फाइनल में उज्बेकिस्तान के पहलवान को एकतरफा रूप से 8-1 के बड़े अंतर से करारी दी। सुजीत की जीत से क्षेत्र में खुशी का माहौल हैं।

नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप में वंशिका ने जीता गोल्ड मेडल

चरखी दादरी। हमारे जिले के खिलाड़ियों का लगातार नेशनल लेवल बाक्सिंग चैम्पिनशिप में शानदार प्रदर्शन रहा है। युवा महिला व पुरूष मुक्केबाज लगातार पूरे देश में जिले का नाम को रोशन कर रहे है। इसी कड़ी में युवा होनहार मुक्केबाज वंशिका अहलावत ने पहले भी क्षेत्र के नाम को राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया और राष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन कर नेशनल लेवल पर गोल्ड मेडल जीतकर पूरे जिले का नाम रोशन किया है। यह उपलब्धि होनहार वंशिका ने गत दिनों नागपुर में हुई सातवीं अंडर 17 जूनियर ब्वॉयज व गर्ल्स चैम्पियनशिप के दौरान हासिल की है। गौरतलब है कि वंशिका रूपाणा बाक्सिंग क्लब में अपना मुक्केबाजी का प्रशिक्षण ग्रहण कर रही है, जहां कोच कैलाश गिल के मार्गदर्शन में उसने अपनी मेहनत और लग्न से ये मुकाम हासिल किया। कोच गिल ने बताया कि प्रतियोगिता में देशभर के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया, लेकिन चरखी दादरी की बेटी वंशिका ने अपने दमदार खेल एवं शानदार प्रदर्शन से सबको पीछे छोड़ते हुए गोल्ड मेडल अपने नाम किया। कोच कैलाश गिल ने बताया कि खिलाड़ी शुरू से ही मेहनती एवं अनुशासित रही है और इसी का परिणाम आज पूरे देश के सामने है।

चरखी दादरी। नेशनल बॉक्सिंग में गोल्ड मेडल जीतने वाली वंशिका को मेडल पहनाते अतिथि।

खबर संक्षेप

रिवासा में रखी महाराणा प्रताप की प्रतिमा की नींव

तोशाम। गांव रिवासा में महाराणा प्रताप की प्रतिमा की नींव रखी गई। नींव रखने के लिए भिवानी राजपूत सभा के अध्यक्ष डॉक्टर बृजपाल परमार व वेदपाल खरक पहुंचे। गांव में पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। भिवानी राजपूत सभा के अध्यक्ष डॉक्टर बृजपाल परमार ने कहा कि महाराणा प्रताप किसी एक समाज के महापुरुष नहीं थे। सर्वसमाज उनके साथ था। जिन्होंने अपने जीवन मे बहुत संघर्ष किए। उन्होंने अनेक लड़ाई लड़ी। उन्होंने कहा कि जो भी महापुरुष हुए हैं वे पूरे समाज को साथ साथ लेकर चले थे। 19 मई को मूर्ति का नावर्ण किया जाएगा। इस मौके पर आईबी से रिटायर्ड एसपी लालमन सिंह, पूर्व डीएसपी महाबीर चौपड़ा, बिटू रिवासा, भूपसिंह, मोनू रिवासा, भागसिंह, नारायण, मुंशीराम, उदयसिंह आदि मौजूद थे।

अमर शहीद क्रांति दिवस का आयोजन

बहल। अमृतसर के जलियांवाला बाग हत्याकांड में मारे गए निर्दोष लोगों की स्मृति में 13 अप्रैल को कस्बे के लोहारू रोड स्थित शहीद चौक पर अमर शहीद क्रांति दिवस का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर शहीद भगत सिंह चौक के सौंदर्यकरण कार्य पूरा होने पर उसका उदघाटन किया जाएगा और रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा।

उक्त जानकारी देते हुए कार्यक्रम के आयोजक पंचायत समिति के अध्यक्ष विजय फौगाट ने बताया की कार्यक्रम में प्रदेश के पूर्व मंत्री जेपी दलाल व शहीद भगत सिंह के पौत्र और ऑल इंडिया शहीद भगत सिंह ब्रिगेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष यादविंदर सिंह सिंधु मुख्य अतिथि होंगे। जबकि एसडीएम मनोज दलाल, श्री अलख आश्रम के महंत विकास गिरी महाराज, डीडीपीओ सोमबीर कादियान, बीडीपीओ अमिल, एसडीओ संजीव कुमार विशिष्ट अतिथि होंगे।कार्यक्रम में युवाओं को शहीद भगत सिंह के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज और राष्ट्रहित में काम करने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

समाज सुधारक थे महात्मा फुले : संजय

तोशाम। भाजपा के युवा नेता एवं बीडीसी सदस्य संजय खानक ने महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती पर उन्हें याद करते हुए महात्मा ज्योतिबा फुले को महान समाज सुधारक बताया है। प्रेस को जारी बयान में भाजपा युवा नेता एवं बीडीसी सदस्य संजय खानक ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले एक महान भारतीय समाज सुधारक, विचारक और लेखक थे, जिन्हें भारतीय सामाजिक क्रांति का जनक माना जाता है। उन्होंने दलितों, पिछड़ों और महिलाओं की शिक्षा, समानता और सशक्तिकरण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर उन्होंने 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला और सन 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की। वहीं सन 1888 में 11 मई को उन्हें महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनका कहना था कि महात्मा ज्योतिबा फुले महिला शिक्षा और जाति प्रथा के खिलाफ निरंतर संघर्षरत रहे। उनका जीवन हमें समानता, शिक्षा और मानवता के विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

गोल्डन गर्ल प्रिया घणघस का हुआ स्वागत

भिवानी। धनाना गांव की बॉक्सर बेटी प्रिया एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप में गोल्डन गर्ल बनी है। प्रिया का भिवानी पहुँच पर भव्य स्वागत हुआ। हर कोई अपनी बेटी को सर आँखों पर बैठ कर झूम रहा था। मिनी क्यूबा कहे जाने वाले भिवानी की बेटियों के मुक्कों की धमक दुनिया भर में गूंजती रहती है। ताजा उदाहरण बनी हैं प्रिया घणघस। जिसमें 60 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीता है। खास बात ये है कि प्रिया ने हर मुकाबला विश्व विजेता प्रतिद्वंद्वियों को एकतरफा हराया है। अपनी जीत व भव्य स्वागत से खुश हुईं प्रिया घणघस ने बताया कि ओलंपिक में विजेंद्र सिंह बॉक्सर के मेडल से प्रेरित होकर 2016 में बॉक्सिंग खेलना शुरू किया। परिवार का पूरा सहयोग मिला और कोच के गुर से ये गोल्ड मेडल जीता। प्रिया ने कहा कि अब वो इसी साल होने वाले कॉमनवेल्थ, एशियन तथा 2028 के ओलंपिक खेलों में देश को गोल्ड दिलाने के लिए पशीना बहाएँगी। वहीं प्रिया के ताऊ रणबीर प्रधान ने कहा कि उन्होंने गाँवों की बेटियों पर गर्व है। उन्होंने कहा कि ये देशी घी दूध व चुकने का कमाल है। वहीं कोच महाबीर ने कहा कि प्रिया तिसरी बार एशियन चैंपियन बनी है। कोच का कहना है कि प्रिया अब पहले से कहीं और तेज गती से देश को मेडल पर मेडल दिलाएगी।

देवराला में रक्तदान शिविर में 25 यूनिट रक्त एकत्रित किया

भिवानी। समाजसेवा और मानव सेवा ही माधव सेवा के संकल्प को चरितार्थ कर रविवार को गांव देवराला स्थित डीपीएस स्कूल में सहारा चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया। देव एजुकेशन सोशल वेलफेयर सोसायटी के तत्वावधान में शिविर में युवाओं ने भारी उत्साह दिखाया और 25 यूनिट रक्त एकत्रित किया। शिविर का शुभारंभ सोसायटी के चेयरमैन सुरेंद्र सिंह की देखरेख में हुआ। रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाते हुए चेयरमैन सुरेंद्र सिंह एवं प्राचार्या अन्नु अहलावत ने कहा कि रक्तदान केवल एक दान नहीं, बल्कि सामाजिक एकता एवं सद्भावना का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि रक्तदान शिविर जरूरतमंद रोगियों को जीवनदान देने के समान है, ये न केवल मानवता की सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है, बल्कि समाज में आपसी सहयोग और भाईचारे की भावना को भी सुदृढ़ करता है। शिविर के दौरान सोसायटी ने सभी रक्तदाताओं को सम्मानित किया। प्रत्येक रक्तदाता को बैज लगाकर और प्रशंसा पत्र देकर निःस्वार्थ योगदान की सराहना की। इस मौके पर मुख्य रूप से पहुंचे शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने युवाओं को प्रेरित करते हुए बताया कि रक्तदान न केवल दूसरों की जान बचाता है, बल्कि स्वयं रक्तदाता के स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभकारी है।

भारत विकास परिषद की शिवाजी शाखा का दायित्व ग्रहण कार्यक्रम संपन्न

लोहारू। भारत विकास परिषद की छत्रपति शिवाजी शाखा के नए पदाधिकारियों का रविवार को आदर्श प्ले स्कूल में दायित्व ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें भारत विकास परिषद के पश्चिमी प्रांतीय उपाध्यक्ष अशोक शर्मा, जिला समन्वयक राजबीर कौशिक, सह जिला समन्वयक अनिल तायल, जिला परिषद के वाइस चेयरमैन प्रतिनिधि संजय जांगड़ा आदि ने शिरकत की। कार्यक्रम में राजीव वत्य को अध्यक्ष, सुभाष सैनी ने सचिव और संपत्ति सैनी ने कोषाध्यक्ष का दायित्व ग्रहण किया। पदाधिकारियों ने कहा कि संगठन ने उन्हें जिम्मेदारी सौंपी है, उसका वे बखूबी निर्वहन करेंगे। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष सुरेश भारद्वाज, पूर्व अध्यक्ष नरेश ठुकराल, आदर्श रामलीला समिति संत लाल सैनी, एसएसजे फाउंडेशन अध्यक्ष अनिल जोशी, लोहारू समस्या समाधान के प्रदीप सैनी, जितेंद्र जांगड़ा, सीए विपिन अग्रवाल, प्रवीण जोशी सहित अनेक लोगों ने शिरकत की।

लिफ्ट लेकर गाड़ी लूटने के दो आरोपियों को 10 वर्ष का कारावास व 21,000-21,000 जुर्माना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जिला एवं सत्र न्यायाधीश डी आर चालिया ने लिफ्ट लेकर गाड़ी लूटने के दो आरोपियों को दस दस साल कैद की सजा सुनाई है। साथ ही आरोपियों पर 21-21 हजार रुपये जुर्माना लगाया है। जुर्माना अदा न करने की सूरत में आरोपियों को अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार झुंझुनू (राजस्थान) निवासी एक व्यक्ति ने थाना जूई कला में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायतकर्ता ने बताया कि दो दिसम्बर 21 की रात को वह अपनी स्विफ्ट कार में दिल्ली ड्यूटी पर जा रहा था। लोहारू के पास एक दुकान पर सामान लेने के लिए गाड़ी रोकने पर वहां पहले से मौजूद दो युवकों ने उससे बातचीत की और दिल्ली जाने के लिए लिफ्ट मांगी। शिकायतकर्ता द्वारा लिफ्ट देने के कुछ दूरी बाद ही दोनों आरोपियों ने पिस्टल दिखाकर उसकी गाड़ी लूट ली तथा उसे बीच रास्ते में उतारकर फरार हो गए और पुलिस को बताने पर जान से मारने की धमकी दी थी। शिकायत के आधार पर थाना जूई कला में संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीम ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय में पेश किया। ट्रायल के दौरान पुलिस द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों व गवाहों के आधार पर न्यायालय ने आरोपियों को दोषी करार दिया।

महात्मा ज्योतिबा फूले को किया नमन, दी श्रद्धांजलि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

महात्मा ज्योतिबा फूले जयंती पर सैनी समाज ने वार्ड नंबर 13 स्थित सैनी धर्मशाला समारोह का आयोजन किया और सभी ने महात्मा फूले को नमन कर श्रद्धांजलि अर्पित की। आयोजन की अध्यक्षता प्रधान जयपाल सैनी ने की। आयोजन का शुभारंभ हवन व यज्ञ के साथ किया। महात्मा ज्योतिबा फूले के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्वलित करके समाज के वरिष्ठ लोगों ने विचार गोष्ठी में सहभागिता की। वक्ताओं ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा फूले ने छुआछूत, ऊंच-नीच एवं जातिगत भेदभाव जैसी कुरीतियों को जड़ से मिटाने का संकल्प लिया। महात्मा फुले का मानना था कि शिक्षा केवल साक्षरता नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का सबसे सशक्त माध्यम है। इसी दूरगामी सोच के साथ उन्होंने 1848 में पुणे में देश का पहला बालिका विद्यालय खोलकर महिलाओं एवं वंचितों के लिए बंद पड़े ज्ञान के द्वार खोल दिए।

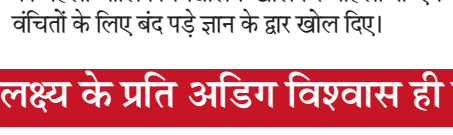

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

सम्मान समारोह | अनुशासन, कड़ी मेहनत और अपने लक्ष्य के प्रति अडिग विश्वास ही सफलता पाने की चाबी : सुखदीप

सौ युवा प्रतिभाओं को मिला सम्मान, दिया सफलता का मंत्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जाट धर्मशाला में आयोजित जाट प्रतिभा सम्मान समारोह में उस वक्त गर्व और उल्लास का माहौल देखते ही बना, जब प्रशासनिक सेवाओं से लेकर सेना और खेल के मैदान तक अपनी मेधा का लोहा मनवाने वाली करीब 100 विभूतियों को एक साथ सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि लेफ्टिनेंट जनरल सुखदीप सांगवान रहे, जबकि अध्यक्षता जाट धर्मशाला के संरक्षक चौधरी चंद्र सिंह आर्य ने की। इस अवसर पर जाट धर्मशाला सभा के प्रधान चौधरी दिलबाग सिंह सांगवान भी विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम में समाज की उन प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया, जिन्होंने आईएएस, एचसीएस और न्यायिक सेवाओं में अपनी जगह बनाई है। साथ ही एनडीए और सीडीएस के माध्यम से सेना में अफसर बनने वाले युवाओं, आईआईटी-आईआईएम के छात्रों और एमबीबीएस पास आउट मेधावियों को स्मृति चिह्न देकर नवाजा गया। शिक्षा के क्षेत्र में 10वीं व 12वीं में 95 प्रतिशत से अधिक अंक पाने वाले छात्रों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों की 100 के करीबन प्रतिभाओं को मंच के माध्यम से सम्मानित किया गया।

भिवानी। समारोह में प्रतिभाओं को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

आने वाली पीढ़ी न केवल जागरूक है, बल्कि देश सेवा के लिए पूरी तरह समर्पित : सांगवान

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यअतिथि लेफ्टिनेंट जनरल सुखदीप सांगवान कहा कि आज इन चमकते चेहरों को देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि हमारी आने वाली पीढ़ी ना केवल जागरूक है, बल्कि देश सेवा के लिए पूरी तरह समर्पित भी है। उन्होंने कहा कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता; अनुशासन, कड़ी मेहनत और अपने लक्ष्य के प्रति अडिग विश्वास ही आपको फर्श से अर्श तक ले जाता है। समाज को इन युवाओं पर गर्व है।

ये हुए सम्मानित

समारोह में आईएएस उज्ज्वल घणघस, आशिका सांगवान, यशवंत सांगवान, सुनीता श्योराण, एचसीएस अंकित सांगवान, जज प्रियंका श्योराण, मोनिका पंघाल, एनडीए-सीडीएस पॉयलेट राहुल चौधरी, रिंकू, दिशा, अजय, रजत, राजेश, नेहा, इशु सिहाग, साकेत जाखड़, मोनू, पॉयलेट यशवर्धन, डा. स्वीकृति पंघाल व डा. मानव पंघाल, अभिषेक सांगवान, जगदीप सांगवान, आईआईटी पास आऊट दीप्ति मोर, सचिन, जेआरएफ क्लीयर अमित कुमार, शरहो घणघस, ओरीन बजाड़, मुक्केबज नीतू घणघस, साक्षी ढ़ांडा, तमन्ना बेनिवाल, मोनिका चहल, जैस्मिन लंबोरिया, प्रिया घणघस, प्रीति पंवार, पूजा बोहरा नुपुर श्योराण, राचिका बेरवाल, नवीन कुमार, सौरभ, यश, रविन, अमन सिवाच, राहुल सांगवान, डिस्कस थ्रो में मैडलिस्ट दयावंती, मा. जय सिंह कोच, कुश्ती में मैडलिस्ट साहिल पंघाल, कबड्डी, पिंकी जीतपुर सहि 12वीं कक्षा की उत्तीर्ण आरिका, सयम, एकता, तपश व 10वीं कक्षा उत्तीर्ण नमन घणघस, वांशिका, मादी, खुशी, दीक्षा, रितेश, नीतिका, गार्गी चौधरी, रेखा, ईपशा, याशिका सहरावत, रमनदीप आदि को मंच के माध्यम से सम्मानित किया गया। इस दौरान एनएमएमएस परीक्षा में प्रदेश भर में टॉप करने वाली गीता महलावत को विशेष रूप से सम्मानित किया गया।